Dhanauri International Journal of Multidisciplinary Research (DIJMR)
Volume 1 Issue 2,December (2025)
ISSN: 3107-9563 (online)
doi.org/10.5281/zenodo.18270848

"युवा शक्ति एवं नैतिक मूल्यों के पुनर्जागरण में श्री गुरु तेग बहादुर जी का योगदान : श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्रीमद्भगवद्गीता एवं भारतीय ज्ञान-परम्परा के आलोक में मूल्य-आधारित शिक्षा का विवेचनात्मक अध्ययन"

सागर सिंह सिरोला* प्रो0 (डॉ0) एल0 एम0 पाण्डेय**

*शोध अध्येता, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा,शिक्षक शिक्षा विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय,लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़,नैनीताल(उत्तराखण्ड)।

**आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, शिक्षक शिक्षा विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय,लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़, नैनीताल (उत्तराखण्ड)।

शोध सारांशिका- प्रस्तुत शोध-विमर्श भारतीय ज्ञान-परम्परा में निहित मूल्य-प्रधान शिक्षण-दृष्टि, युवा-शक्ति के चरित्र-निर्माण तथा नैतिक पुनर्जागरण की अनिवार्यता के परिप्रेक्ष्य में श्री गुरु तेग बहादुर जी के आदर्शों का दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति में धर्म, सत्य, अहिंसा, करुणा, तप, समभाव एवं त्याग जैसे तत्त्व केवल आध्यात्मिक अवधारणाएँ नहीं, अपितु शिक्षण-प्रक्रिया के मूलाधार हैं। श्री गुरु तेग बहादुर जी का जीवन इस सम्पूर्ण मूल्य-परम्परा का जीवन्त प्रतिरूप है, जिसमें मानवता, निर्भयता, त्याग, सहिष्णुता एवं सार्वभौमिक नैतिकता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में प्रतिपादित भगवद् स्मरण, सेवा, समता, श्रम एवं मानव-एकता के सन्देश तथा श्रीमद्भगवद्गीता के कर्मयोग, स्थितप्रज्ञता, कर्तव्य, नेतृत्व एवं आत्मबल के सिद्धान्त युवाओं के चरित्र-निर्माण के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इन दोनों ग्रन्थों में निहित शिक्षा-दर्शन एवं श्री गुरु तेग बहादुर जी के आदर्श एक-दूसरे के पूरक रूप में उभरते हैं।समकालीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020 में मूल्य-आधारित, संस्कृति-समन्वित, बहुआयामी एवं समग्र शिक्षण की जो अवधारणा प्रतिपादित है, उसका आध्यात्मिक आधार वस्तुतः भारतीय ज्ञान-परम्परा एवं गुरु-वाङ्मय में निहित है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध यह स्पष्ट करता है कि युवा-शक्ति के नैतिक पुनर्जागरण, मानवीय सशक्तिकरण एवं राष्ट्रीय संवृद्धि के लिए श्री गुरु तेग बहादुर जी का आदर्श-दर्शन वर्तमान समय में भी सर्वाधिक प्रासंगिक एवं पथ-प्रदर्शक है। शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि सेयह शोध अध्ययन स्पष्ट करता है कि मूल्य-आधारित शिक्षा तभी सफल हो सकती है जब शिक्षण में साहस, सहिष्णुता, समभाव, सेवा, आत्मबल एवं कर्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का व्यवहारगत अनुप्रयोग विकसित किया जाए, जैसा कि गुरु-विचारधारा तथा गीता-दर्शन में प्रतिपादित है।

__संकेताक्षर (Key Words) :__**युवा शक्ति, नैतिक मूल्य, मूल्य आधारित शिक्षा, श्री गुरु तेग बहादुर जीका दर्शन, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का आदर्श, श्रीमद्भगवद्गीता का कर्मयोग, भारतीय ज्ञान परम्पराएवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**

1.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में मानव जीवन को केवल भौतिक उन्नति का साधन नहीं, अपितु आत्म-उद्धार, मानसिक परिष्कार, सामाजिक सौहार्द एवं विश्व-कल्याण का माध्यम माना गया है। मानव-समाज में जब-जब नैतिक पतन, आन्तरिक अस्थिरता, वैचारिक विभाजन, हिंसा, स्वार्थ, मूल्य-संकट एवं अनैतिक प्रवृत्तियाँ उभरती हैं, तब भारतीय ज्ञान-परम्परा के महापुरुषों की शिक्षाएँ नवचेतना उत्पन्न करती हैं। इसी महान परम्परा में श्री गुरु तेग बहादुर जी का योगदान अत्यन्त उत्कृष्ट एवं अनुपमेय है।उनका जीवन बलिदान, निर्भयता, सहिष्णुता, सत्यनिष्ठा, त्याग एवं मानव-धर्म का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने परधर्म के संरक्षण हेतु अपना जीवन न्यौछावर कर सम्पूर्ण विश्व को यह सन्देश दिया कि धर्म का आशय सम्प्रदायगत सीमा नहीं, अपितु

Corresponding author email:sarlabhardwaj23@gmail.com
Published online-17 January 2026

मानव-मर्यादा, स्वतंत्रता एवं न्याय की रक्षा है। यह मूल्य-दृष्टि आधुनिक शिक्षाशास्त्र की उस अवधारणा से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ती है जो शिक्षा को चरित्र-निर्माण, नैतिक अनुशासन, आत्मबल-विकास तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में देखती है।आधुनिक समय में युवा-पीढ़ी अनेक मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसे समय में श्री गुरु तेग बहादुर जी का मूल्य-दर्शन युवा-शक्ति को आत्मिक दृढ़ता, नैतिक स्पष्टता एवं साहसिक नेतृत्व की प्रेरणा प्रदान करता है। यह शोध-पत्र इसी उच्च आदर्श को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्रीमद्भगवद्गीता का शिक्षा दर्शन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020के शिक्षाशास्त्रीय तत्त्वों से जोड़ते हुए प्रस्तुत करता है।

1.2 शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य (Rationale and Significance of the Research Study)

समकालीन भारतीय समाज में नैतिक मूल्य-अपक्षय, युवा-पीढ़ी में बढ़ती मानसिक अस्थिरता, तात्कालिक लाभ की प्रवृत्ति, सामाजिक-सांस्कृतिक विभाजन, हिंसक व्यवहार, ईर्ष्या, कुंठा, द्वेष, हताशा, निराशा एवं भग्नाशा, ये सभी परिस्थितियाँ मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता एवं अनिवार्यता को पुनः से विचारणीय बनाती हैं। युवा राष्ट्र की धुरी हैं, और उनका चरित्र यदि सत्य, साहस, शौर्यता, वीरता, पराक्रमता, सेवा, समता एवं आध्यात्मिक संतुलन पर आधारित न हो, तो समाज में दीर्घकालिक समरसता एवं न्याय-संरचना सम्भव नहीं हो सकती। ऐसे में श्री गुरु तेग बहादुर जी का आदर्श भारतीय ज्ञान-परम्परा में निहित उन शाश्वत तत्त्वों को प्रत्यक्ष रूप से सन्दर्भित करता है, जो नैतिकता, मानवता, सेवा-भाव, निर्भयता, आत्मबल एवं करुणा पर आधारित हैं। आधुनिक शिक्षा जब कौशल-केन्द्रित होकर मूल्य-विमुख होती जा रही है, तब गुरु-वाणी, गीता-दर्शन एवं भारतीय सांस्कृतिक ग्रन्थ युवा-जीवन के लिए स्थायी दिशानिर्देश प्रदान करते हैं।श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में प्रतिपादित समता, सेवा, सिमरन, श्रम एवं मानवीय एकता के तत्त्व तथा श्रीमद्भगवद्गीता का कर्मयोग, स्थितप्रज्ञता, मनोनिग्रह, निष्कामता एवं नेतृत्व-दर्शन युवाओं के व्यक्तित्व-विकास के लिए अत्यन्त प्रासंगिक हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा में भारतीय ज्ञान-परम्परा, आध्यात्मिक-नैतिक मूल्यों, चरित्र-निर्माण एवं सांस्कृतिक चेतना को पुनर्स्थापित करने का आह्वान करती है। इस सन्दर्भ में यह शोध—

- क्यों आवश्यक है?
- वर्तमान की कौन-सी चुनौतियाँ इसे अनिवार्य बनाती हैं?
- इसे शिक्षा-दर्शन में किस प्रकार समाहित किया जा सकता है?

— इन सभी प्रश्नों के समाधान हेतु औचित्यपूर्ण योगदान प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार यह शोध अध्ययन न केवल विषयगत रूप से प्रासंगिक है, अपितु नैतिक रूप से अनिवार्य तथा शिक्षाशास्त्रीय रूप से अत्यन्त उपयोगी है।

1.3 सम्बन्धित साहित्य का विवेचनात्मक पुनरावलोकन (Analytical Review of Related Literature)

प्रस्तुत शोध के सैद्धान्तिक आधार एवं अध्ययन-क्षेत्र को सुस्पष्ट करने हेतु विषय से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का पुनरावलोकन किया गया है। इन अध्ययनों से न केवल शोध की वर्तमान स्थिति का बोध होता है, अपितु यह भी स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत अध्ययन किस बिन्दु पर नवीनता एवं अनुसंधानात्मक विस्तार प्रस्तुत करता है। इसी क्रम में पूर्ववर्ती प्रमुख शोधअध्ययन का संक्षिप्त समीक्षात्मक विवेचन निम्नवत् है—

- कौर, हरप्रीत (2025) ने "सिख दर्शन में नैतिक शिक्षा एवं मानव मूल्यों" विषयक अध्ययन में यहनिष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि सिख गुरुओं की शिक्षाएँ सत्य, साहस, सेवा एवं समानता जैसे मूल्यों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह अध्ययन मूल्य-आधारित शिक्षा को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ते हुए समकालीन शिक्षा प्रणाली में इसके समावेशन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।
- सिरोला, सागर सिंह (2024) ने "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020" विषय पर किए गए अध्ययन में यह प्रतिपादित किया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीय ज्ञान-परम्परा पर आधारित ज्ञान, विज्ञान एवं दर्शन के समन्वय पर विशेष बल देती है। इस नीति के माध्यम से विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के प्रति गौरवबोध विकसित होने की प्रबल सम्भावना व्यक्त की गई है।
- सिरोला, सागर सिंह (2023) द्वारा किए गए अध्ययन "श्री गुरु नानक देव जी के शिक्षा विचारों की वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता" में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है कि श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाएँ विद्यार्थियों में व्याप्त ईर्ष्या, द्वेष, निराशा एवं कुसंग जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों के परित्याग हेतु अत्यन्त प्रभावी एवं अनुकरणीय हैं।
- सिंह, गीता (2022) ने अपने शोध "भारतीय ज्ञान परम्परा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में

प्रासंगिकता" में यह निष्कर्ष दिया है कि भारत के सर्वांगीण विकास के लिए अपने परम्परागत ज्ञान को समझना एवं शिक्षा व्यवस्था में क्रियान्वित करना अनिवार्य है। इसके लिए पाठ्यचर्या निर्माण एवं शिक्षण-अभिकल्प में नीतिगत निर्देशों के व्यवहारिक अनुप्रयोग की आवश्यकता बताई गई है।

●प्रश्रीचा, मेहक (2021) द्वारा किए गए अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाएँ किसी एक धर्म तक सीमित न होकर सार्वभौमिक स्वरूप की हैं। ये शिक्षाएँ मानव-मात्र के लिए नैतिक एवं शैक्षिक मार्गदर्शन प्रदान करती हैं, अतः इन्हें वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में समाविष्ट किया जाना उपयुक्त होगा।

●सोनकर, अर्जुन (2019) ने "श्रीमद्भगवद्गीता में निहित जीवन दर्शन एवं शैक्षिक विचारों" के अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि गीता का शिक्षा-दर्शन सार्वभौमिक है, जिसमें शिक्षा के उद्देश्यों, आदर्शों एवं मूल्यों का समन्वित विवेचन प्राप्त होता है। शिक्षा-दर्शन की दृष्टि से श्रीमद्भगवद्गीता को एक अमूल्य ग्रन्थ माना गया है।

● मिश्रा, अनुराग (2018) द्वारा किए गए अध्ययन "भारतीय सन्त परम्परा एवं मूल्य-आधारित शिक्षा" में यह प्रतिपादित किया गया है कि भारतीय सन्तों के जीवन-दर्शन में निहित नैतिक एवं आध्यात्मिक तत्व विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं। अध्ययन के अनुसार शिक्षा में सन्त परम्परा का समावेश युवाओं में नैतिक विवेक एवं आत्मानुशासन विकसित कर सकता है।

●शर्मा, राखी (2015) द्वारा किए गए अध्ययन में यह निष्कर्षित किया गया है कि श्रीमद्भगवद्गीता के षष्ठम अध्याय में वर्णित परामर्शी उपागम आधुनिक निर्देशन एवं परामर्श की अवधारणाओं से साम्य रखते हैं। ये उपागम शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अन्तर्द्वन्दों से ग्रस्त मानव के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं कल्याणकारी सिद्ध हो सकते हैं।

● कुलश्रेष्ठ, दीपशिखा (2014) ने अपने शोध "समकालीन शिक्षा में नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण एवं शैक्षिक समाधान" में यह निष्कर्ष दिया है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक पक्ष की उपेक्षा मूल्य-संकट का प्रमुख कारण है। अध्ययन में यह सुझाव दिया गया है कि भारतीय ज्ञान-परम्परा पर आधारित मूल्य-शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्थान देकर युवाओं के नैतिक पुनर्निर्माण की दिशा में सार्थक प्रयास किया जा सकता है।

सम्बन्धित साहित्य के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान-परम्परा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तथा मूल्य-आधारित शिक्षा के विभिन्न आयामों पर पर्याप्त शोध कार्य उपलब्ध है। अनेक अध्ययनों में श्रीमद्भगवद्गीता, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब एवं सिख दर्शन के नैतिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक पक्षों का पृथक्-पृथक् विवेचन किया गया है। इसी प्रकार कुछ शोध में समकालीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों के ह्रास तथा उसके समाधान के रूप में भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है।तथापि उपलब्ध साहित्य में यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है कि श्री गुरु तेग बहादुर जी के जीवन, विचार एवं बलिदान को युवा शक्ति के नैतिक पुनर्जागरण तथा मूल्य-आधारित शिक्षा के सन्दर्भ में समग्र एवं केन्द्रित रूप से अध्ययन करने का अभाव है। अधिकांश शोध या तो सिख गुरुओं के दर्शन को सामान्य रूप में प्रस्तुत करते हैं अथवा भारतीय ज्ञान-परम्परा को व्यापक दार्शनिक दृष्टि से विवेचित करते हैं, परन्तु उन्हें समकालीन शिक्षा प्रणाली एवं युवाओं की नैतिक चुनौतियों से प्रत्यक्ष रूप से नहीं जोड़ते।इसके अतिरिक्त, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब एवं श्रीमद्भगवद्गीता में निहित नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक शैक्षिक विश्लेषण, विशेषतः श्री गुरु तेग बहादुर जी के विचार-दर्शन के आलोक में, अत्यन्त सीमित रूप में ही उपलब्ध है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान-परम्परा के पुनर्स्थापन की बात तो की गई है, किन्तु सन्त-परम्परा से प्राप्त मूल्यों को व्यवहारिक शैक्षिक ढाँचे में रूपान्तरित करने हेतु ठोस अध्ययन अपेक्षाकृत दुर्लभ हैं।अतएव यह कहा जा सकता है कि वर्तमान शोध साहित्य में श्री गुरु तेग बहादुर जी के मूल्य-दर्शन को भारतीय ज्ञान-परम्परा, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्रीमद्भगवद्गीता तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के सन्दर्भ में एकीकृत करते हुए, युवा शक्ति के नैतिक पुनर्जागरण हेतु मूल्य-आधारित शिक्षा के रूप में प्रस्तुत करने का एक स्पष्ट शोध-अंतराल विद्यमान है। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतराल की पूर्ति का प्रयास करता है।

1.4 शोध उद्देश्य (Objectives of the Research Study)

श्री गुरु तेग बहादुर जी के नैतिक आदर्शों, त्याग-धर्म एवं मानव-कल्याण दृष्टि का दार्शनिक एवं शिक्षाशास्त्रीय अध्ययन करना।

भारतीय ज्ञान पर परम्परा में निहित सत्य, अहिंसा, करुणा, समभाव, तप एवं धर्मनिष्ठा के तत्वों का युवा-संवर्धन के सन्दर्भ में विश्लेषण करना।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के सेवाधर्म, समता, समानता, भगवद्-स्मरण एवं श्रम के शिक्षा दर्शन का युवा चरित्र निर्माण के सन्दर्भ में विश्लेषण करना।

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित कर्तव्य, निष्कामता, नेतृत्व, आत्मबल एवं मन:संयम के शैक्षिक तत्वों को श्री गुरु तेग बहादुर जी के आदर्शों से तुलनात्मक रूप से प्रस्तुत करना।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्रीमद्भगवद्गीता एवं श्री गुरु तेग बहादुर जी के मूल्य दर्शन का तुलनात्मक विश्लेषण कर मूल्य आधारित शिक्षा का एक समन्वित प्रतिमान प्रस्तुत करना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020में उल्लिखित संस्कृति समन्वितनैतिक एवं चरित्र केन्द्रित शिक्षा को श्री गुरु तेग बहादुर जी की विचारधारा के आलोक में विश्लेषित करना।

1.5 शोधप्रविधि (ResearchMethodology)

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति दार्शनिक (Philosophical), गुणात्मक (Qualitative)एवं विवेचनात्मक-विश्लेषणात्मक (Analytical-Interpretive) है। यह अध्ययन भारतीय ज्ञान-परम्परा के नैतिक दर्शन, सिख दर्शन एवं गीता के कर्मयोग सिद्धान्त पर आधारित है, जहाँ शिक्षा कोचरित्र-निर्माण, आत्म-संयम एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का माध्यम माना गया है। इस प्रकार इस शोध का मुख्य ध्येय श्री गुरु तेग बहादुर जी के मूल्य-दर्शन एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के दो प्रमुख ग्रन्थों (श्री गुरु ग्रन्थ साहिब एवं श्रीमद्भगवद्गीता) के शैक्षिक सिद्धान्तों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

- **शोध अध्ययन का प्रकार (Type of Research Study)**

यह शोध अध्ययन एक विषयवस्तु-विश्लेषण (Content Analysis)एवं ग्रन्थालय-आधारित (Library-based)शोध है, जिसका आधार साहित्यिक तथा दार्शनिक पाठ (PhilosophicalTexts) हैं। इसमें किसी प्रकार के प्राथमिक प्रदत्त संग्रहण (यथा सर्वेक्षण अथवाअनुप्रयोग) का उपयोग नहीं किया गया है।

- **प्रदत्त संकलन स्रोत (Data Collection Sources)**

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतुशोध सामग्री के संकलन हेतु निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है :

(अ) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का मूल पाठ : विशेष रूप से श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी तथा 'सेवा', 'समता', 'नाम सिमरन' से सम्बन्धित अन्य शिक्षाप्रद वाणियाँ।

(ब) श्रीमद्भगवद्गीता का मूल पाठ: 'कर्मयोग', 'स्थितप्रज्ञता', 'मनोनिग्रह' एवं 'आत्मबल' से सम्बन्धित श्लोक।

(स) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020):मूल्य-आधारित शिक्षा एवं भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बन्धित प्रासंगिक दस्तावेज़।

(द)श्री गुरु तेग बहादुर जी के जीवन चरित्र, बलिदान एवं शिक्षाओं पर आधारित प्रामाणिक पुस्तकें एवं अन्य प्रतिष्ठित दार्शनिकों एवं शिक्षाशास्त्रियों के शोध प्रपत्र एवं टीकाएँ।

- **विश्लेषण की प्रविधि (Technique of Analysis)**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में संकलित प्रदत्त सामग्री का विश्लेषण दो प्रमुख प्रविधियों के माध्यम से किया गया है :

(अ) विषय-वस्तु विश्लेषण (Content Analysis):इसके अन्तर्गत श्री गुरु ग्रन्थ साहिब एवं श्रीमद्भगवद्गीता में निहित 'सत्य', 'निर्भयता', 'कर्तव्य', 'समभाव' और 'त्याग' जैसे साझा नैतिक मूल्यों (Shared Ethical Values) की पहचान की गयी है।

(ब) तुलनात्मक एवं समालोचनात्मक विश्लेषण (Comparative and Critical Analysis):इसके अन्तर्गत उपर्युक्त ग्रन्थों में वर्णित शैक्षिक मूल्यों की तुलना श्री गुरु तेग बहादुर जी के जीवन-आदर्शों से करते हुए, उनके शिक्षाशास्त्रीय निहितार्थ (Educational Implications)को स्पष्ट करनेतथा वर्तमान युवा-शक्ति के परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

1.6 विश्लेषणात्मक विवेचन एवं परिणाम (Analytical Discussion and Findings) :

1.6.1.श्री गुरु तेग बहादुर जी का आदर्श-दर्शन: युवा शक्ति के लिए पथ-प्रदर्शक

श्री गुरु तेग बहादुर जी का जीवन एवं बलिदान भारतीय इतिहास की वह अमूल्य धरोहर है, जो युवा शक्ति को निर्भयता, त्याग एवं सार्वभौमिक मानवता के सर्वोच्च आदर्शों की ओर प्रेरित करता है। उन्हें 'हिन्द दी चादर' (भारत की ढाल) कहा जाना मात्र एक उपाधि नहीं, अपितु उनके जीवन-दर्शन का सार है। उन्होंने जिस समय औरंगजेब की क्रूर नीतियों के विरुद्ध कश्मीरी पंडितों के धर्म की रक्षा के लिए अपना शीश न्यौछावर किया, वह घटना यह स्पष्ट करती है कि धर्म का अर्थ किसी संप्रदाय की सीमा में बंधा होना नहीं, अपितु मानव मर्यादा, स्वतंत्रता व न्याय की रक्षा करना है।

●निर्भयताका दर्शन

श्री गुरु तेग बहादुर जी के दर्शन का केन्द्रीय तत्त्व है अभय (निर्भयता)। उन्होंने अपनी वाणी में स्पष्ट किया है कि ज्ञानी वही है जो न तो किसी को भयभीत करता है और न ही किसी से भयभीत होता है। यह अवधारणा युवा पीढ़ी के लिए अत्यन्त आवश्यक है, जो सामाजिक दबावों एवं चुनौतियों के समक्षप्रायः अपना आत्मविश्वास खो देती है। इस सम्बन्ध में गुरु जी का उद्घोष है:

"भय काहू को देत नहि, नहि भय मानत आन। कह नानक सुन रे मना, ज्ञानि ताहि बखानि।"[1]

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्लोक महला 9, पृष्ठ 1427)

यह श्लोक युवाओं को आंतरिक दृढ़ता (Inner Strength)प्रदान करने का शैक्षिक आधार है। यह सिखाता है कि सत्य व धर्म की रक्षा के लिए भयमुक्त होकर खड़ा होना ही सच्चे ज्ञान की पहचान है। उनका स्वयं का बलिदान इस दर्शन का व्यवहारिक अनुप्रयोग (Practical Application) है। उन्होंने मृत्यु के भय को त्याग कर सत्य पर अडिग रहने का मार्ग चुना।

● त्याग एवं वैराग्य

गुरु जी की बाणी में मोह-माया एवं भौतिक आसक्ति से मुक्ति पर भी बल दिया गया है। युवा-पीढ़ी में उपभोक्तावादएवं तात्कालिक लाभकी प्रवृत्ति बढ़ रही है। श्री गुरु तेग बहादुर जी का दर्शन इस भौतिकवादी प्रलोभन से ऊपर उठकर कर्तव्य एवं नैतिक आदर्शों के लिए सर्वस्व त्याग की प्रेरणा देता है। इस सम्बन्ध में गुरु जी का उद्घोष है:

"जो प्राणी मोह तजै, सब मायां। कह नानक सो मुकत है, सिधि ता कै पायां।"[2]

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्लोक महला 9, पृष्ठ 1427)

यह शिक्षा युवा शक्ति को यह बोध कराती है कि सच्ची सफलता एवं मुक्ति भौतिक सम्पदा में नहीं, अपितु नैतिक मूल्यों के प्रति अनासक्तिएवं समर्पण में निहित है। उनका बलिदान केवल धार्मिक नहीं, अपितु नैतिक मूल्यों के लिए किया गया सर्वोच्च त्याग था।

● मानव-एकता एवं सहिष्णुता

गुरु जी ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि धर्म की सीमाएँ संकुचित नहीं हो सकतीं। जब उन्होंने कश्मीरी पंडितों के पक्ष में खड़ा होना स्वीकार किया, तो उन्होंने मानव-धर्म को संप्रदायगत धर्म से ऊपर रखा। यह सहिष्णुता एवं समभाव का वह चरम आदर्श है, जो वर्तमान के वैचारिक विभाजन व सामाजिक संघर्षों के युग में युवा पीढ़ी को सामाजिक सौहार्दएवं राष्ट्रीय एकता के लिए प्रेरित करता है।

1.6.2. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का मूल्य-आधारित शिक्षा दर्शन: युवा चरित्र निर्माण के सन्दर्भ में

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी केवल एक धार्मिक ग्रन्थ नहीं हैं, अपितु यह एक ऐसा नैतिक एवं शिक्षाशास्त्रीय कोष है जो मानव जीवन को सही दिशा प्रदान करता है। इसमें निहित 'सेवा', 'समता', 'सिमरन' एवं 'श्रम' के सिद्धान्त युवा पीढ़ी के लिए एक सुदृढ़ चरित्र व सामाजिक जिम्मेदारी का आधार निर्मित करते हैं। इस प्रकार यह दर्शन आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में मानवीय मूल्यों को बनाए रखने की शिक्षा देता है।

●सेवा और सिमरन: आत्मिक एवं सामाजिक समन्वय

गुरु-वाणी में सेवा को बिना किसी स्वार्थ के मानवता की निःस्वार्थ सेवा के रूप में परिभाषित किया गया है। यह युवा शक्ति को परोपकार, सामाजिक भागीदारी एवं सामूहिक कल्याण के लिए प्रेरित करता है। वहीं सिमरन अर्थात भगवद्-स्मरण मानसिक शान्ति, एकाग्रता एवं आत्मिक बल को बढ़ाता है। यह एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक अनुशासन है, जो आधुनिक युवाओं में बढ़ते मानसिक तनावएवं अस्थिरता को नियंत्रित करने में सहायक है।

शैक्षिक निहितार्थ:यह सिद्धान्त युवाओं में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करता है, जिससे वे केवल व्यक्तिगत उन्नति ही नहीं, अपितु समाज के उत्थान के विषय में भी सोचते हैं। सेवा, व्यक्ति को अहंकारसे मुक्त करती है, जो चरित्र निर्माण का प्रथम चरण है।

●समताएवं मानवीय एकता

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का एक प्रमुख सन्देश मानव मात्र की एकता है। गुरु जी की शिक्षाएँ जाति, धर्म, लिंग, या सामाजिक स्थिति के आधार पर किसी भी प्रकार के भेद-भाव को अस्वीकार करती हैं। यह समता का आदर्श युवा शक्ति को एक समावेशी (Inclusive)एवं न्यायपूर्ण

---

[1]श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्लोक महला 9, पृष्ठ 1427
[2]श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्लोक महला 9, पृष्ठ 1427

(Just)समाज के निर्माण के लिए प्रेरित करता है।उदाहरण के लिए 'लंगर' व्यवस्था लोक समता एवं समानता का जीवन्त प्रतीक है, जहाँ सभी लोग एक साथ, बिना किसी भेद-भाव के भोजन ग्रहण करते हैं।

शिक्षा के लिए प्रासंगिकता:आज के बहुसांस्कृतिक समाज में, यह दर्शन युवाओं में सहिष्णुता (Tolerance)एवं पारस्परिक सम्मान (Mutual Respect)को बढ़ावा देता है, जो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिए परम आवश्यक है।

●श्रम (कीरत करो): ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा

गुरु-वाणी में किरत करो (ईमानदारी से श्रम करना) पर बल दिया गया है। यह सिद्धान्त युवाओं को सत्यनिष्ठा से अपनी आजीविका कमाने एवं दूसरों की मेहनत पर निर्भर न रहने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का शिक्षा दर्शन युवा शक्ति को आत्मिक रूप से सशक्त, सामाजिक रूप से जिम्मेदार एवं नैतिक रूप से ईमानदार बनने का मार्ग दिखाता है, जो श्री गुरु तेग बहादुर जी के सर्वोच्च त्याग के आदर्शों का पूरक है।

शैक्षिक निहितार्थ: यह मूल्य युवा पीढ़ी में कड़ी मेहनत (Hard Work),कर्तव्यनिष्ठा एवं पारदर्शिता (Transparency)जैसे गुणों को स्थापित करता है। यह नैतिकता पर आधारित व्यावसायिक आचरण (Ethical Professional Conduct) का आधार है।

1.6.3.श्रीमद्भगवद्गीता: कर्मयोग, नेतृत्व एवं आत्मबल का शैक्षिक सिद्धान्त

श्रीमद्भगवद्गीता को भारतीय ज्ञान-परम्परा का सर्वाधिक व्यावहारिक (Most Practical)दर्शन माना जाता है। यह युद्धभूमि (कुरुक्षेत्र) में दिया गया उपदेश है, जो जीवन के संघर्षों में कर्तव्य, नैतिकता एवं मानसिक संतुलन बनाए रखने का व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह दर्शन युवा पीढ़ी को 'क्रिया-हीनता' (Inaction)एवं 'तात्कालिक परिणाम'(Immediate Results)की अपेक्षा सक्रिय भागीदारी (Active Participation)व आत्म-नियंत्रण की ओर उन्मुख करता है।

● कर्मयोग: निष्कामता एवं कर्तव्य-निष्ठा

गीता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धान्त कर्मयोग है, जो कर्म (कार्य) करने पर बल देता है, न कि उसके परिणाम पर आसक्त होने पर। यह युवा शक्ति के लिए एक शक्तिशाली सन्देश है जो उन्हें निराशा (Frustration)व हताशा से बचाता है, जब अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते।

मूल उद्धरण (श्रीमद्भगवद्गीता):

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥[3]

(श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 2, श्लोक 47)

शैक्षिक निहितार्थ: यह श्लोक युवाओं को सिखाता है कि सफलता के सुनिश्चित परिणामों में नहीं, अपितु प्रयास की गुणवत्ता (Quality of Effort)एवं कर्तव्य के प्रति समर्पण में निहित है। यह उन्हें जिम्मेदारी (Responsibility)स्वीकार करने तथा समाज में अपनी भूमिका को कर्तव्यनिष्ठा से निभाने के लिए प्रेरित करता है, जो श्री गुरु तेग बहादुर जी के 'धर्मनिष्ठा' के आदर्श का पूरक है।

● स्थितप्रज्ञता एवं मानसिक संतुलन

श्रीमद्भगवद्गीता में स्थितप्रज्ञ (स्थिर बुद्धि वाला व्यक्ति) सम्प्रत्यय आदर्श युवा नेतृत्व के लिए अत्यन्तप्रासंगिक है। स्थितप्रज्ञ वह होता है जो सुख-दुख, मान-अपमान, लाभ-हानि, एवं सफलता-विफलता में समभाव बनाए रखता है। उदाहरण: "दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः"[4] (दुःख आने पर जिसका मन उद्विग्न नहीं होता तथा सुखों के प्रति जो निस्पृह होता है)।

शैक्षिक निहितार्थ: युवा संवर्धन

वर्तमानसमय में, यह सिद्धान्त युवाओं को मानसिक लचीलापन (Mental Resilience)एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional

---

[3]श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 2, श्लोक 47

[4]श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 2, श्लोक 56

Intelligence) प्रदान करता है, जिससे वे तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी सही निर्णय ले सकेंगे।

आत्मबल एवं मनोनिग्रह

अर्जुन को दिए गए उपदेशों में, श्रीकृष्ण ने मन को वश में करने तथाइन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित करने पर बल दिया है, क्योंकि मन ही मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र व शत्रु हो सकता है।

मूल उद्धरण:

"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥[5]"
(श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 6, श्लोक 5)

अर्थात् मनुष्य को स्वयं ही अपना उद्धार करना चाहिए, स्वयं को गिराना नहीं चाहिए। मनुष्य स्वयं ही अपना मित्र है तथा स्वयं ही अपना शत्रु।

निष्कर्ष: यह आत्मबल का दर्शन युवा शक्ति को स्वयं पर विश्वास करने, आत्म-आलोचना करने एवं नकारात्मक प्रवृत्तियों पर विजय पाने की प्रेरणा देता है। यह श्री गुरु तेग बहादुर जी के उस निर्भयता के आदर्श को साकार करता है, जो आंतरिक शक्ति (Inner Power)से उत्पन्न होती है।

1.6.4.श्री गुरु तेग बहादुर जी का मूल्य-दर्शन: श्रीमद्भगवद्गीता एवं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का समन्वित प्रतिमान

प्रस्तुत शोध अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि श्री गुरु तेग बहादुर जी का जीवन-दर्शन एवं उनका सर्वोच्च बलिदान, वस्तुतः श्री गुरु ग्रन्थ साहिब तथा श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शाश्वत मूल्यों का चरम एवं व्यवहारिक प्रदर्शन है। तीनों ही प्रणालियाँ युवा शक्ति को व्यक्तिगत उन्नति से ऊपर उठकर सार्वभौमिक नैतिकता व सामाजिक न्याय के लिए जीने की प्रेरणा देती हैं। इन तीनों दार्शनिक धाराओं में निहित साझा नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक विश्लेषण को इस प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है :

प्रमुख नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक सारणीयन–

क्र0सं0	**नैतिक मूल्य**	**श्री गुरु तेग बहादुर जी का आदर्श-दर्शन**	**श्रीमद्भगवद्गीता का सिद्धान्त**	**श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षा**
01.	निर्भयता	सर्वोच्च बलिदान: धर्म की रक्षा हेतु मृत्यु केभय का त्याग (अंतिमक्रियान्वयन)।	आत्मज्ञान: दुःख-सुख में समत्व एवं आत्म-अविनाशिता का ज्ञान। (दार्शनिक आधार)।	अभय की अवस्था: "भय काहू को देत नहि, नहि भय मानत आन।" (आध्यात्मिक लक्ष्य)।
02.	कर्तव्यनिष्ठा	पर-धर्म की रक्षा: स्वयं के हित से ऊपर उठकर दूसरों के कर्तव्य की पूर्ति हेतु त्याग।	कर्मयोग: फल की आसक्ति छोड़कर अनासक्त भाव से कर्म करना। (क्रियात्मक मार्गदर्शन)।	सेवाधर्म: निःस्वार्थ सेवा के माध्यम से सांसारिक कर्तव्य को निभाना। (सामाजिक दृष्टिकोण)।
03.	सहिष्णुता	मानव-धर्म: किसी अन्य संप्रदाय के धर्म की रक्षा के लिए खड़ा होना। (सामाजिक समन्वय)।	समत्व बुद्धि: ज्ञानी का सभी प्राणियों के प्रति समान भाव रखना। (बौद्धिक आधार)।	मानव-एकता: जाति, वर्ण और ऊँच-नीच के भेद को अस्वीकार करना। (सामुदायिक आदर्श)।
04.	मनोनिग्रह/ त्याग	वैराग्य: भौतिक सुख-सुविधाओं और जीवन की आसक्ति का त्याग।	स्थितप्रज्ञता: मन और इंद्रियों को वश में रखना, तटस्थ रहना।	नाम सिमरन: मन को भटकने से रोककर प्रभु-स्मरण में लगाना।

- समन्वित प्रतिमान का निर्माण

प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययन स्पष्ट करता है कि मूल्य-आधारित शिक्षा का एक समन्वित प्रतिमान (Integrated Model)इन तीनों आदर्शों के मेल से निर्मित किया जा सकता है:

[5] श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 6, श्लोक 5

(क) श्रीमद्भगवद्गीता का योगदान: यह युवाओं को निष्काम कर्म (Action without Attachment)एवं स्थितप्रज्ञता (Mental Stability)का बौद्धिक ढाँचा प्रदान करता है।
(ख) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का योगदान: यह सेवा (Seva),समता (Equality) एवं श्रम (Honest Living)के माध्यम से मूल्यों के सामाजिक एवं सामुदायिक अनुप्रयोग का मार्ग दिखाता है।
(ग) श्री गुरु तेग बहादुर जी का योगदान: गुरु जी का जीवन इन दोनों दर्शनों को सर्वोच्च व्यवहारिक आदर्श (Ultimate Practical Ideal)के रूप में स्थापित करता है। उनका बलिदान यह सिखाता है कि कर्तव्यनिष्ठा (गीता) एवं मानव-एकता (गुरु-वाणी) के लिए निर्भयतापूर्वक (गुरु तेग बहादुर जी) खड़ा होना ही नैतिक शिक्षा की अभीष्ट सफलता है।निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि युवा शक्ति के नैतिक पुनर्जागरण के लिए वर्तमान में ऐसे शिक्षा-प्रतिमान की आवश्यकता है जो उन्हें गीता की तरह कर्मठ, गुरु-वाणी की तरह समतावादी, एवं श्री गुरु तेग बहादुर जी की तरह निर्भीक बनाए।

1.6.5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में मूल्य-आधारित शिक्षा का विश्लेषण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक मौलिक परिवर्तन का आह्वान करती है। इस नीति का एक केन्द्रीय उद्देश्य शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रखकर, विद्यार्थियों को मूल्य-आधारित, चरित्र-केन्द्रितएवं संस्कृति-समन्वित बनाना है। यह दृष्टिकोण प्रत्यक्ष तौर पर भारतीय ज्ञान-परम्परा (Indian Knowledge System - IKS) एवं श्री गुरु तेग बहादुर जी के आदर्श-दर्शन से जुड़ता है।

- भारतीय ज्ञान परम्परा (IKS)एवं चरित्र निर्माण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020स्पष्ट करती है कि शिक्षा को भारतीय ज्ञान की समृद्ध परम्पराओं में निहित नैतिक मूल्यों, तार्किक चिन्तन एवं मानव-केन्द्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा देना चाहिए।

- श्री गुरु तेग बहादुर जी के आदर्शों की पुष्टि: श्री गुरु तेग बहादुर जी का दर्शन (सत्य, त्याग, निर्भयता) एवं गुरु-वाणी/गीता का दर्शन (सेवा, समता, कर्मयोग) NEP 2020के इस आह्वान का दार्शनिक आधार प्रस्तुत करते हैं। यह दर्शन युवाओं को जड़ों से जुड़ा हुआ तथा वैश्विक रूप से जागरूक नागरिक बनाने की नीतिगत आवश्यकता को पूरा करता है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020द्वारा प्रस्तावित समग्र शिक्षा (Holistic Education)की अवधारणा, गुरु-वाणी के समता एवं सेवा के आदर्शों से प्रेरित है, जहाँ ज्ञान को व्यक्तिगत विकास और सामाजिक कल्याण के बीच संतुलन स्थापित करने के रूप में देखा जाता है।
- मूल्य-आधारित एवं नैतिक शिक्षा पर नीति का बल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020, विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक, सत्यनिष्ठा, सहिष्णुता, करुणा, सेवाभाव एवं सम्मान जैसे मौलिक कर्तव्यों व संवैधानिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में समाहित करने पर विशेष बल देती है।

- मूल्यों का व्यवहारगत अनुप्रयोग: श्री गुरु तेग बहादुर जी का जीवन-चरित्र (धर्म की रक्षा हेतु बलिदान) इन मूल्यों का व्यवहारिक अनुप्रयोग सिखाता है। यह शिक्षा देता है कि नैतिक मूल्य केवल सैद्धांतिक पाठ नहीं, अपितु जीवन जीने की शैली हैं।
- युवा-शक्ति का नैतिक पुनर्जागरण: समकालीन चुनौतियाँ (मानसिक अस्थिरता, सामाजिक विभाजन) जिनके कारण यह शोध आवश्यक बना, उनका समाधान राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020की दृष्टि एवं श्री गुरु तेग बहादुर जी के दर्शन के समन्वय से ही सम्भव है। यह समन्वय युवा-शक्ति को आत्मबल (श्रीमद्भगवद्गीता से प्रेरित) व सामाजिक साहस (गुरु तेग बहादुर जी से प्रेरित) प्रदान करता है, जिससे वे राष्ट्र की संवृद्धि में रचनात्मक योगदान दे सकें।

1.7शोध निष्कर्ष एवं विमर्श / सुझाव (Conclusion and Discussions / Suggestions)

1.7.1.शोध के निष्कर्ष (Conclusion of the Study)

प्रस्तुत शोध अध्ययन, "युवा शक्ति एवं नैतिक मूल्यों के पुनर्जागरण में श्री गुरु तेग बहादुर जी का योगदान," यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान-परम्परा (श्री गुरु ग्रन्थ साहिब एवं श्रीमद्भगवद्गीता) तथा श्री गुरु तेग बहादुर जी के आदर्शों में निहित नैतिक दर्शन, समकालीन युवा-शक्ति के चरित्र निर्माण व नैतिक पुनर्जागरण के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक एवं अनिवार्य है।इसकेप्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

●सर्वोच्च नैतिक आदर्श: श्री गुरु तेग बहादुर जी का जीवन एवं बलिदान (उद्देश्य 1) निर्भयता, त्याग व सहिष्णुता का एक अभूतपूर्व उदाहरण है। उनका 'हिन्द दी चादर' का आदर्श यह स्थापित करता है कि मानवता की मर्यादा की रक्षा करना ही सर्वोच्च धर्म है, जो युवा-शक्ति को साहसिक नेतृत्व की प्रेरणा देता है।

●समन्वित शिक्षा दर्शन: प्रस्तुत शोध ने स्पष्ट किया है कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब (उद्देश्य 3) का समता, सेवा व श्रम का सन्देश तथा श्रीमद्भगवद्गीता (उद्देश्य 4) का निष्काम कर्मयोग, स्थितप्रज्ञता व मनोनिग्रह का सिद्धान्त, युवा-शक्ति को बाह्य वआन्तरिक, दोनों प्रकार की चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार करता है।

●तुलनात्मक प्रमाणिकता :उक्त तीनों दार्शनिक प्रणालियाँ (उद्देश्य 5) 'सत्य', 'कर्तव्य' एवं 'समभाव' जैसे शाश्वत मूल्यों पर केन्द्रित हैं। श्री गुरु तेग बहादुर जी का दर्शन इन मूल्यों का व्यवहारिक समन्वयन प्रस्तुत करता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि सैद्धांतिक ज्ञान का व्यवहारगत अनुप्रयोग ही वास्तविक शिक्षा है।

●राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020की पुष्टि : यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लिखित संस्कृति-समन्वित, मूल्य-आधारित शिक्षा (उद्देश्य 6) का आध्यात्मिक एवं दार्शनिक आधार इन्हीं भारतीय ज्ञान-परम्पराओं में निहित है। श्री गुरु तेग बहादुर जी के आदर्शों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020के लक्ष्यों को साकार करने का एक सशक्त माध्यम है।

इस प्रकार वर्तमान समाज में नैतिक मूल्य-अपक्षय एवं युवा-पीढ़ी की मानसिक अस्थिरता को दूर करने के लिए, श्री गुरु तेग बहादुर जी का आदर्श-दर्शन, श्रीमद्भगवद्गीता के कर्म एवं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित गुरु-वाणी की सेवा के साथ मिलकर, एक सुदृढ़ नैतिक आधारशिला प्रदान करता है, जो राष्ट्र की संवृद्धि हेतु अनिवार्य रूप से आवश्यक है।

1.7.2.शिक्षाशास्त्रीय सुझाव (Educational Suggestions)

उक्तशोध अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर, युवा शक्ति के नैतिक पुनर्जागरण हेतु निम्नलिखित शिक्षाशास्त्रीय सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं:

● जीवन-मूल्यों का व्यवहारगत समावेश: शिक्षण संस्थानों में केवल नैतिक शिक्षा के सैद्धांतिक पाठों पर ही नहीं, अपितु श्री गुरु तेग बहादुर जी के जीवन से जुड़े त्याग, निर्भयता व सहिष्णुता के व्यावहारिक उदाहरणों को वैयक्तिक अथवा प्रकरण अध्ययन / केस स्टडी के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

●दार्शनिक समन्वय पर बल: पाठ्यक्रम में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब एवं श्रीमद्भगवद्गीता के केवल धार्मिक पहलुओं पर ही नहीं, अपितु उनके सार्वभौमिक नैतिक एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर अधिक बल दिया जाना चाहिए, ताकि युवा इन्हें अपने दैनिक जीवन में भी अनुप्रयोग कर सकें (जैसे- कर्मयोग, स्थितप्रज्ञता)।

●साहस एवं आत्मबल का विकास: शिक्षा को युवा-पीढ़ी में आत्मबल एवं मनोनिग्रह के लिए योग, ध्यान (सिमरन) व नेतृत्व के अभ्यास (नेतृत्व) को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि वे चुनौतियों का सामना भयमुक्त होकर कर सकें।

●शिक्षक प्रशिक्षण: शिक्षकों को भारतीय ज्ञान-परम्परा एवं श्री गुरु तेग बहादुर जी के जीवन दर्शन की गहन समझ प्रदान करने

हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि वे प्रभावी ढंग से मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान कर सकें।

1.8 सन्दर्भ (Reference)

1. अखिलानंद, स. (1998)। मानसिक स्वास्थ्य एवं हिन्दू मनोविज्ञान। आध्यात्मिक विद्या प्रकाशन।
2. कौर, ज. (2015)। सेवा और सिमरन: सिख धर्म में नैतिक मूल्यों का एक अध्ययन। सिख स्टडीज़ रिव्यू, 12(2), 45-60।
3. कुमार, अ. (2022)। भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: प्राचीन ज्ञान का समावेश। शिक्षा एवं संस्कृति पत्रिका, 5(1), 101-115।
4. कुलश्रेष्ठ, दीपशिखा (2014)। समकालीन शिक्षा में नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण एवं शैक्षिक समाधान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मॉरल एण्ड वैल्यू एजुकेशन, 5(2), 61–69।
5. कौर, हरप्रीत (2020)। सिख दर्शन में नैतिक शिक्षा एवं मानव मूल्य। जर्नल ऑफ रिलिजियस एण्ड मॉरल एजुकेशन, 8(2), 50–57।
6. गुरु ग्रन्थ साहिब। (2014)। (जी. एस. मान, अनुवादक)। श्री गुरु नानक देव ट्रस्ट।
7. गोपाल, क. (2020)। श्रीमद्भगवद्गीता में निष्काम कर्म (कर्मयोग) का सार। भारतीय दर्शन अनुसंधान जर्नल, 34(4), 88-105।
8. गीता, श्रीमद्भगवद्। (2018)। (ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद, अनुवादक एवं भाष्यकार)। भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट।
9. धर, पी. के. (2019)। समकालीन भारत में युवा, नैतिकता और नैतिक संकट। नैतिकता एवं समाज जर्नल, 25(3), 112-128।
10. दत्ता, के. (2005)। गुरु ग्रन्थ साहिब का दर्शन। साहित्य अकादमी।
11. पाण्डेय, ए. (2017)। भगवद् गीता का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण। ज्ञानगंगा प्रकाशन।
12. भल्ला, एस. के. (2018)। भारत में मूल्य शिक्षा: दार्शनिक परिप्रेक्ष्य। ओरिएंट लांगमैन।
13. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। भारत सरकार प्रेस।
14. मिश्रा, एस. के. (2012)। युवा सशक्तिकरण और मूल्यों की भूमिका। विकास और समाज पत्रिका, 18(1), 32-48।
15. राय, बी. सी. (2008)। भारतीय शिक्षा दर्शन: शारदा पुस्तक भवन।
16. वर्मा, एस. (2011)। भारतीय परम्परा में धर्म और न्याय। जर्नल ऑफ एथिक्स, 14(3), 5-20।
17. शर्मा, वी. (2019)। गुरु तेग बहादुर जी की बाणी में सहिष्णुता की अवधारणा। धार्मिक दर्शन जर्नल, 7(4), 180-195।
18. सिन्हा, एम. (2016)। शिक्षा में प्राचीन भारतीय मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता। एजुकेशन टुडे, 30(1), 98-110।
19. सिरोला, एस. एस. (2023)। श्री गुरु नानक देव जी के शिक्षा दर्शन का अध्ययन। बोहल शोध मंजूषा, 5(6), 66-78।
20. सिंह, एच. (2003)। गुरु तेग बहादुर और भारत का बदलता चेहरा। पंजाबी यूनिवर्सिटी प्रेस।
21. सिंह, आर. (2021)। नवें गुरु का दार्शनिक योगदान। सिख इतिहास अध्ययन, 45(1), 22-40।
22. सेठी, बी. एस. (2010)। गुरु तेग बहादुर: रक्षक। हिंद विद्या प्रकाशन।

.

******